मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई

छूत की बीमारियाँ यों कई हैं; पर डर जैसी कोई नहीं। इस लिए और भी अधिक, कि यह स्वयं कोई ऐसी बीमारी है भी नहीं—डर किसे ने नहीं जाना ?—और मारती है तो स्वयं नहीं, दूसरी बीमारियों के ज़रिये। कह लीजिये कि वह बला नहीं बलाओं की माँ है....

नहीं तो यह कैसे होता है कि जहाँ डर आता है, वहाँ नफ़रत घृणा और द्वेष, और कमीनापन आ घुसते हैं, और उन के पीछे-पीछे न जाने मानवात्मा की कौन-कौन-सी दबी हुई व्याधियाँ!

वबा का पूरा थप्पड़ सरदारपुरे पर पड़ा। छूत को कोई न कोई वाहक लाता है; सरदारपुरे में इस छूत को लाया सर्वथा निर्दोष दीखने वाला एक वाहक—रोज़ाना अख़बार!

यों अख़बार में मार-काट, दंगे-फ़साद और भगदड़ की ख़बरें कई दिन से आ रही थीं, और कुछ शरणार्थी सरदारपुरे में आ भी चुके थे—दूसरे स्थानों से इधर और उधर जानेवाले काफ़िले कूच कर चुके थे। पर सरदारपुरा उस दिन तक बचा रहा था।

उस दिन अख़बार में विशेष कुछ नहीं था। जाटों और मेवों के उपद्रवों की ख़बरें भी उस दिन कुछ विशेष न थीं—पहले से चल रहे हत्या-व्यापारों का ही ताज़ा ब्यौरा था। केवल एक नई लाइन थी, 'अफ़वाह है कि जाटों के कुछ गिरोह इधर-उधर छापे मारने की तैयारियाँ कर रहे हैं।'

इस तनिक-से आधार को लेकर न जाने कहाँ से खबर उड़ी कि जाटों का एक बड़ा गिरोह हथियारों से लैस, बंदूक़ के गाजे-बाजे के साथ खुले हाथों मौत के नये खेल की पर्चियाँ लुटाता हुआ सरदारपुरे पर चढ़ा आ रहा है।

सवेरे की गाड़ी तब निकल चुकी थी। दूसरी गाड़ी शाँत को जाती थी; उस में यों ही इतनी भीड़ रहती थी और आजकल तो कहने क्या....फिर

भी तीसरे पहर तक स्टेशन खचाखच भर पाया। लोगों के चेहरों के भावों की अनदेखी की जा सकती तो यही लगता कि किसी उर्स पर जाने वाले मुरीद इकट्ठे हैं....

गाड़ी आई और लोग उस पर टूट पड़े। दरवाज़ों से, खिड़कियों से, जो जैसे घुस सका, भीतर घुसा। जो न घुस सके वे किवाड़ों पर लटक गए, छतों पर चढ़ गए, या डिब्बों के बीच में धक्का सँभालनेवाली कमानियों पर काठी कसकर जम गए। जाना ही तो है, जैसे भी हुआ, और फिर कौन टिकट ख़रीदा है जो आराम से जाने का आग्रह हो....

गाड़ी चली गई। कैसे चली और कैसे गई, यह न जाने, पर जड़ धातु होने के भी लाभ हैं ही आखिर!

और उस के चले जाने पर, मेले की जूठन-से जहाँ-तहाँ पड़े रह गये कुछ एक छोटे-छोटे दल जो किसी न किसी कारण उस ठेलमठेल में भाग न ले सके थे—कुछ बूढ़े, कुछ रोगी, कुछ स्त्रियाँ और तीन अधेड़ उम्र की स्त्रियों की वह टोली जिस पर हम अपना ध्यान केन्द्रित कर लेते हैं।

सकीना ने कहा, 'या अल्लाह, क्या जाने क्या होगा।'

आमिना बोली, 'सुना है एक ट्रेन आनेवाली है—स्पेशल। दिल्ली से सीधी पाकिस्तान जाएगी—उस में सरकारी मुलाज़िम जा रहे हैं न? उसी में क्यों न बैठें?'

'कब जाएगी?'

'अभी घंटे-डेढ़ घंटे बाद जाएगी शायद....'

जमीला ने कहा, 'उस में हमें बैठने देंगे? अफ़सर होंगे सब....'

'आखिर तो मुसलमान होंगे—बैठने क्यों न देंगे?'

'हाँ, आखिर तो अपने भाई हैं।'

धीरे-धीरे एक तन्द्रा छा गई स्टेशन पर। आमिना, जमीला और सकीना चुपचाप बैठी हुई अपनी-अपनी बातें सोच रही थीं। उन में एक

बुनियादी समानता भी थी और सतह पर गहरे और हल्के रंगों की अलग-अलग छटा भी....तीनों के स्वामी बाहर थे—दो के फ़ौज में थे और वहीं फ्रंटियर में नौकरी पर थे—उन्होंने कुछ समय बाद आ कर पत्नियों को लिवा ले जाने की बात लिखी थी, सकीना का पति कराची के बंदरगाह में काम करता था और पत्र वैसे ही कम लिखता था, फिर इधर की गड़बड़ी में तो लिखता भी तो मिलने का क्या भरोसा। सकीना कुछ दिन के लिए मायके आई थी सो उसे इतनी देर हो गई थी, उस की लड़की कराची में ननद के पास ही थी। आमिना के दो बच्चे हो कर मर गए थे; जमीला का ख़ाविंद शादी के बाद से ही विदेशों में पलटन के साथ-साथ घूम रहा था और उसे घर पर आए ही चार बरस हो गए थे। अब....तीनों के जीवन उन के पतियों में केन्द्रित थे, सन्तान में नहीं, और इस गड़बड़ के ज़माने में तो और भी अधिक....न जाने कब क्या हो—और अभी तो उन्हें दुनिया देखनी बाक़ी ही है, अभी उन्होंने देखा ही क्या है? सरदारपुरे में देखने को है भी क्या—यहाँ की खूबी यही थी कि हमेशा अमन रहता और चैन से कट जाती थी, सो अब वह भी नहीं, न जाने कब क्या हो....अब तो ख़ुदा यहाँ से सही-सलामत निकाल ले सही....

स्टेशन पर कुछ चहल-पहल हुई, और थोड़ी देर बाद गड़गड़ाती हुई ट्रेन आ कर रुक गई।

आमिना, सकीना और जमीला के पास सामान विशेष नहीं था, एक-एक छोटा ट्रंक, एक-एक पोटली। जो कुछ गहना-छल्ला था वह ट्रंक में अँट ही सकता था, और कपड़े-लत्तर का क्या है—फिर हो जायेंगे। और राशन के ज़माने में ऐसा बचा ही क्या है जिस की माया हो।

जमीला ने कहा, 'वह उधर ज़नाना है!'—और तीनों उसी ओर लपकीं।

ज़नाना तो था, पर सेकंड क्लास का। चारों बर्थों पर बिस्तर बिछे थे, नीचे की सीटों पर चार स्त्रियाँ थीं, दो की गोद में बच्चे थे। एक ने डपट कर कहा, 'हटो, यहाँ जगह नहीं है।'